

1, 2, v. l.; aor. intrans. अपूरि und अपूरिष्ठ P. 3, 1, 61. Vop. 8, 116. 11, 7. perf. पपरत्स् and पप्रत्स्, पपरस् and पप्रस् P. 7, 4, 12; vgl. प्रा. perf. intrans. पुपूरि (पुपूरिरे mit transit. Bed. BHATT. 14, 2); पूर्ण (पूर्त् s. besonders und unter निम्). 1) *füllen*; med. *sich anfüllen*: समानमूर्ध्व नद्यः पूर्णाति RV. 2, 35, 3. 11, 11. 14, 11. 6, 85, 6. यो मे कुली पूर्णाति 10, 28, 2. 86, 14. यदी सोमः पूर्णाति 3, 36, 6. ऋठरं पूर्णायै 6, 67, 7. ऋठरं पूर्णास्व AV. 2, 5, 2. 4. 6, 22, 3. कृता वसुना पूर्णास्व VS. 5, 19. अनानेन समुद्रस्य ऋठरं विपति AV. 13, 3, 4. लोकं पूर्णा VS. 12, 54. वेणुपूरिरे mit Luft erfüllen, blasen in BHATT. 14, 2. काममर्थं च धर्माश्च दाग्धि भूयः विपति च voll machen, sich ansammeln lassen BHAG. P. 3, 32, 1. संकल्पना विश्वसृजा पिपीपिहृि erfülle 4, 19, 33. absol. पूरम् in comp. mit dem obj.: उदरपूरम् (भुङ्क्ते Schol.) P. 3, 4, 31. गोस्पदपूरं (oder ० प्रं) वृष्टे देवः Schol. zu P. 3, 4, 32. BHATT. 14, 20. चर्मपूरम् (स्तृणाति Schol.) wohl die Zahl der Felle voll machend so v. a. bis auf das letzte Fell P. 3, 4, 31; vgl. ऊर्ध्वपूरम्. Dieses पूरम् wird, wie es uns scheint, ohne Noth auf das caus. zurückgeführt. — 2) *sättigen, nähren; aufziehen*: तं ज्ञातं तरुणं विपति माता AV. 9, 1, 5. 1, 34, 4. 5, 26, 5. पर्सन्यः पिता स उं नः विपति 12, 1, 12. पिपूतमर्वतो न आ व्योयत्तामृन्निषाः RV. 1, 93, 12. 6, 60, 12. क्विषा विपति पपूरिः 1, 46, 4. ऋतस्य गर्भं जनुषां विपतिन 136, 3. पितृनपारोतुं *sättigen, laben, befriedigen* BHATT. 1, 2, v. l. für अताप्सति. — 3) *reichlich spenden, verleihen* (acc. der Sache und dat. der Person); *beschenken mit* (instr.): यो मे पूर्णाद्यो ददत् RV. 2, 30, 7. आयः पूर्णाति भेषजम् 4, 23, 21. पूर्णातिमुद्गा दिव्यस्य 7, 65, 4. पूर्णायादिनाधमानाय तव्यान् 10, 117, 5. क ईं स्तवत्कः पूर्णात्को यज्ञाते 6, 47, 15. ऋष्यश्च पर्वत् 1, 186, 3. पूयं नः सुमतिं विपतिन 166, 6. पर्वि राधो मघोनाम 8, 92, 7. 9, 1, 8. एवा न इन्द्र वार्यस्य पूर्ध 7, 24, 6. 1, 36, 12. शग्धि पूर्ध प्र यंसि च 42, 9. पूर्ध चतुः *schenke Helle* 10, 73, 11. तं नः पूर्णादि पप्रुभिः AV. 17, 1, 6. इन्द्रं न लो पूर्णाति राधसा RV. 6, 4, 7. स पारिषत्क्रतुभिर्मन्दसानः 1, 100, 11. पूर्ध यवस्य काशिना 8, 67, 10. Häufig das partic. praes. पूर्णात् in der Bed. der *Freigebiges, uneigennütziges Schenker* (an Götter und Priester insbes.): पूर्णात्तृप्राति मयः RV. 7, 32, 8. पूर्णाति न दत्तिषा 1, 168, 7. यस्ने पूर्णाते च 6, 28, 2. 10, 117, 1. पूर्णात्तः, अतारः AV. 6, 142, 3. Vgl. अपृणात्. — 4) *पूर्णते* (ep. auch act.) *sich füllen, erfüllt werden, sich sättigen*: जले कुम्भस्य पूर्यतः (घोषम्) R. 2, 63, 21. 64, 14. सुच. 1, 264, 11. fgg. जलविन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः Spr. 945. पूर्यते प्रजया पप्रुभिः CAT. Br. 14, 5, 1, 5, 4, 2, 5. (आश्रमम्) वनातराडुपावतिः — पूर्यमाणम् — तपस्विभिः RAGH. 1, 49. अपूरि कृारिर्कर्मस्थरामानशतिनेभः KATHÁS. 18, 12. विरिक्तं पूर्यमाणं च वर्जयेदद्रादिदत्तम् सुच. 1, 120, 15. 247, 11. आ पूर्यमाणमवहृन्नि भवः *der sich sättigen will* RV. 1, 51, 10. धृतेन आवापथिवी पूर्यथाम् VS. 5, 28. धनुषो भङ्गनादिन वायुनिर्घोषकारिणा । चचालातःपूरं सर्वं दिशश्चैव पुपूरिरे ॥ HARIV. 4309. KATHÁS. 20, 226. BHATT. 14, 99. शब्दायत्ते मधुरमनिलैः कोचकाः पूर्यमाणाः MBH. 57. (यडुनन्दनः) तेजसा चाप्यपूर्यत HARIV. 11066 (S. 792.) तेजसा पूर्यति MBH. 14, 627. *voll werden, von einer Zahl*: यावता दश पूर्यन् LĀTJ. 9, 2, 4. Vgl. das caus., dessen pass. von diesem intrans. in der Form (wenn man vom nicht geschriebenen Accent absieht) sich nicht unterscheidet. — 5) *partic. पूर्णी* (wird für das partic. des caus. angesehen und पूरित gleichgesetzt) *angefüllt, voll* (die Ergänzung im instr. oder gen. Vop. 5, 25) P. 7, 2, 27. Vop. 26, 144. AK. 3,

2, 48. H. 1473. an. 2, 149. MED. η. 22. HALĀJ. 4, 17. कुम्भ AV. 3, 12, 8. VS. 3, 49. CAT. Br. 1, 9, 2, 3. fgg. 11, 2, 4, 1. fgg. 14, 8, 4, 1. KĀTJ. ÇR. 9, 6, 26. N. 23, 10. R. 1, 2, 24. KĀTJ. ÇR. 4, 1, 5, 7 (अ०). सेमिन पूर्णा कलशम् AV. 9, 4, 6. RV. 1, 82, 4. R. 1, 26, 19. CAT. Br. 12, 5, 2, 7. 14, 5, 4, 2. LĀTJ. 2, 11, 15. पूर्णान्परिस्रुतः कुम्भान् CAT. Br. 11, 5, 5, 13. DAÇ. 2, 3. घटमयां पूर्णाम् M. 11, 183. 186. HARIV. 4003. R. 5, 20, 15. 6, 96, 4. नैः RV. 5, 59, 2. 7, 16, 11. उभा तै पूर्णा वसुना गर्भस्ती 37, 3. सरः 103, 7. HIT. 1, 165. अन्ः M. 11, 140. पयोधर Spr. 1310. सुतासः RV. 4, 37, 2. पूर्णामासी AV. 7, 80, 1. चन्द्र (vgl. पूर्णचन्द्र, पूर्णान्द्र) AK. 1, 1, 2, 8. H. 149. यो पर्यस्तमयं पूर्ण उदियात् ÇĀNKH. Br. 1, 3, 5. GOBH. 1, 5, 13. दिशः CAT. Br. 13, 5, 4, 4. ÇĀNKH. Br. 16, 9, 13. (नाड्यः) प्रुक्तस्य नीलस्य u. s. w. पूर्णाः CAT. Br. 14, 7, 4, 20. धनस्य पूर्णा KĀND. Up. 3, 11, 6. TAITT. Up. 2, 8. M. 6, 76. तेनेष पूर्णाः TAITT. Up. 2, 2. (पुरी) पूर्णा हरिक्रियापमैः R. 1, 6, 21. VRT. in LA. 3, 1. BRAHMA-P. ebend. 49, 18. भाण्डपूर्णानि यानानि M. 8, 405. मस्यपूर्णं नेत्रम् HIT. 21, 8. अश्रुपूर्णाती N. 12, 75, 18, 13. 22, 22. वाष्पपूर्णावदन DAÇ. 2, 20. R. 6, 96, 12. कोचकैर्माहृतपूर्णरन्ध्रैः RAGH. 2, 12. दर्य० MBH. 3, 8671. R. 1, 55, 19. *vollständig, vollzählig, voll* (von einer Zahl); = कृत्स्न, समग्र AK. 3, 2, 15. H. an. MED. अतीरुिणी R. 1, 54, 12. पूर्णाकृतिभिः MBH. 14, 627. ज्ञान BHAG. P. 2, 6, 39. 8, 19, 41 (अ०). 42. पुरुष 1, 7, 4. 4, 24, 36. 8, 1, 16. पूर्णवर्षास्वराश्रमे प्रवदति मृगद्विजाः R. 5, 73, 52. पूर्णवर्षाव्यवस्थानि-स्तैस्तेः सन्मणिभिश्चितम् KATHÁS. 33, 54. प्रणव ÇĀNKH. Br. in Ind. St. 2, 310. अपूर्णालक्षणा देवी KATHÁS. 8, 31. पूर्णाविंशतिवर्ष M. 2, 212. द्वे शते पूर्णा 8, 121. 338. MBH. 3, 10497. R. 1, 57, 4. 62, 17. पूर्णा षष्टादशे वर्षे MBH. 3, 16625. KATHÁS. 32, 44. अपूर्णमेकेन शतम् so v. a. 99 RAGH. 3, 38. दश पूर्णा (die Calc. Ausg. schreibt दशपूर्णा) शतानि so v. a. *volle zehn Hundert* MBH. 3, 10667. *abgelaufen*: काल ÇĀNKH. GRHJ. 2, 11. JĀGŪ. 3, 21. तस्य वर्षमकृत्स्नस्य त्रते पूर्णे *vollbracht, beendet* R. 1, 65, 4. in *Erfüllung gegangen, erfüllt*: मनोरथ R. 1, 10, 34. ÇĀK. 106, 3, v. l. RAGH. 2, 72. दानानि च प्रयच्छन्ति पूर्णधर्माश्च कुर्वते MĀRK. P. 66, 34. सविद् *abgemacht* RĀGĀ-TAR. 4, 353. *befriedigt*: दीर्घमायुः स मे प्रादात्तो ऽहं पूर्णमानसः R. 3, 73, 25. आकार्णपूर्णा धनुः so v. a. *ein bis zum* (rechten) *Ohr angespannter Bogen* MBH. 4, 1096. 1694. eben so आकार्णपूर्णा बाणाः 7, 3603. 9357. HARIV. 6841; vgl. u. dem caus. n. *Fülle, volles Maass*: सं नः पूर्णानि यच्छन्तु AV. 7, 17, 1. TS. 2, 4, 5, 1. AV. 10, 8, 15. 29. = उदक Wasser NAIGH. 1, 12. Nach MED. ist पूर्णा noch = शक्त *im Stande seiend*, nach GADĀ-DHARABHATTĀKĀRJA im ÇKDR. = स्वीयमुखेच्छावदन्य *selbstsüchtig*. — Vgl. सुपूर्णं und पूर्त.

1. caus. पारयति *füllen* DRĀTUP. 32, 15. *erfüllen*: स वस्वः कामं पीप-रत् RV. 2, 20, 4.

2. caus. पूरयति (DRĀTUP. 33, 128), ०ते 1) *füllen, anfüllen, voll machen*: उदात्रं पूरयित्वा CAT. Br. 14, 9, 4, 18. 8, 7, 2, 1. MBH. 3, 16747. पिपीलिकानां चाणानां पूरयामास तं घटम् *anfüllen mit* HARIV. 6456. नो-रेण CAT. Br. 13, 8, 4, 2. KĀTJ. ÇR. 21, 4, 20. PĀR. GRHJ. 2, 2. तुला पूरयते ऽशनिः MBH. 13, 2071. पूरयस्व — समुद्रम् 3, 8319. वायुना पूर्यमाणानां सा-गराणामिव स्वनः R. 6, 99, 25. वर्धयन्विपुलं कायं तस्याः कायमपूरयम् 5, 56, 58. अपरे ऽपूरयन्कूपान्वापुभिः R. SCHL. 2, 80, 9. क्रोशत्या वदनं चास्याः पूरयामास पोषुना R. GOHR. 2, 77, 11. HIT. 23, 7. माथुरस्य पोषुना चतुर्षी पूरयित्वा MĀKĀH. 35, 18. चञोरिति सूत्रे निष्ठायामनिट इति पूरयित्वा